اپریل ۲۰۱۱ء

ماہنامہ شعاع عمل لکھنؤ

قَالَ اللّٰهُ تبارَکَ وَتَعالیٰ قَدْ جاءَ کُمْ مِنَ اللّٰهِ نُورٌ وَ کِتابٌ مُبِینٌ

بے شک تمہارے پاس اللہ کی طرف سے نور آیا ہے اور روشن کتاب

یا فاطمۃ الزہراء



نورہدایت فاؤنڈیشن، حسینیۂ غفرانمآبؒ، چوک، لکھنؤ۔۳

R.N.I. No. UPBIL/2004/13526
Postel Regd.No. SSP/LW/NP-75/2011-13 Dispatch Date: 2 & 6 of Every Month

SHUA-E-AMAL
Lucknow

शुआ-ए-अमल
हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका लखनऊ

April 2011





NOOR-E-HIDAYAT FOUNDATION
Imambara Ghufran Maab, Chowk, Lucknow-3 (U.P.) INDIA, Ph.:0522-2252230

बिस्मेही तआला

नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन की

इस्लामी, ज्ञान व शोध

हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका

अप्रैल–2011

शुआ-ए-अमल

"लखनऊ"

वर्ष 7 — अंक 10

न्यास संस्थापन

15 जमादिलऊला 1424 हि० / 16 जुलाई 2003 ई०

पत्रिका विमोचन

15 जमादिलऊला 1425 हि० / जुलाई 2004 ई०

मिलने का पता

नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन

इमामबाड़ा हज़रत गुफ़रानमआब, मौलाना कल्बे हुसैन रोड, चौक, लखनऊ - 3

Phone No: 0522-2252230 — 0522-4062731 Mobile No: 09335276180 — 09335996808

सै. कल्बे जवाद नक़वी प्रिन्टर, पब्लिशर और प्रोपराइटर ने मासिक शुआ-ए-अमल (उर्दू, हिन्दी) निज़ामी आफ़सेट प्रेस विक्टोरिया स्ट्रीट लखनऊ से छपवाकर आफ़िस नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन इमामबाड़ा गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड लखनऊ-3 से प्रकाशित किया। सम्पादक : सै० मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी 'असीफ़ जाएसी'।

Per copy 20/- Annual 200/-

सम्पादन समिति

- डॉ० अमानत हुसैन
- सै० सुफ़यान अहमद नदवी
- मिर्ज़ा हुमायूँ क़दर
- डॉ० आरिफ़ अब्बास
- बिन्ते ज़हरा 'नदल हिन्दी'



R.N.I. No.
UPBIL/2004/13526



Postal Regd. No.
SSP/LW/NP-75/2008-10



WEBSITE:
www.noorehidayatfoundation.com
www.al-ijtihaad.com



E_mail:
noorehidayat@yahoo.com
noorehidayat@gmail.com

वार्षिक अंशदान

1- यूरोप, अमरीका, कनाडाः
80 अमरीकी डालर
2- ख़लीजी मुमालिकः
60 अमरीकी डालर
3- एशिया, पाकिस्तानः
40 अमरीकी डालर
4- पाकिस्तान ज़मीनी डाकः
20 अमरीकी डालर

लाइफ़ मेम्बरशिपः 4000/-

विषय सूची

अप्रैल 2011ई०

रबीउस्सानी 1432हि० जमादिल अव्वल 1432हि०

न० लेख व लेखक	पृष्ठ
1— उसूले दीन (क़िस्त-1) सैय्यिदुल उलमा सै० अली नक़ी नक़वीताबा सराह	3
2— इंसान से मुताल्लिक़ इस्लाम की सोच अल्लामा सै० मुहम्मद रज़ी साहब क़िब्ला, कराची	5
3— इस्लाम और इंसानी हुक़ूक़ क़ाएदे मिल्लत मौलाना सै० कल्बे जवाद नक़वी	7
4— लीबिया जहाँ कुँओं से तेल नहीं ख़ून उबल रहा है ...... इंटरनेशनल वेमन्स–डे के सौ साल जनाब शकील हसन शम्सी साहब, देहली	10 12
5— मुख्य समाचार इदारा	15

मासिक **"शुआ-ए-अमल"** (हिन्दी-उर्दू), **"ख़ानदाने इज्तेहाद नम्बर"** और नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन से प्रकाशित **सभी किताबों** को डाउनलोड करने के लिए

लॉग आन करें
हमारी वेबसाइट

Log on Our Website:
www.noorehidayatfoundation.com

किस्त-1

उसूले दीन

आयतुल्लाहिलउज़्मा सैय्यिदुलउलमा सै० अली नक़ी नक़वी ताबा सराह

परिचय

इस्लाम धर्म का विकास उस काल में हुआ जबकि संसार की समस्त जातियाँ उपास्यों की अधिकता पर गर्व करती थीं। पवित्र पैग़म्बरे इस्लाम एवं उनके परिवार वालों ने संसार को एक अल्लाह (ईश्वर) की उपासना करने का उपदेश दिया। यह उपदेश इस ढंग से दिया कि आज संसार के सभी धर्म किसी न किसी रूप में ईश्वर के मानने का दावा करते हैं।

यह पत्रिका (मज़मून) इस्लामिक दृष्टिकोण से एक ईश्वर के विषय में ज्ञान देती है तथा ब्रह्म की इकाई पर तर्क किया गया है। यह मज़मून इस्लाम धर्म के सिद्धान्तों के प्रकाशन माला की प्रथम कड़ी है।

वे सभी लोग जो इस्लाम धर्म से रूचि रखते हैं अपने अमूल्य मतों से हमारी सहायता कर सकते हैं तथा निवेदन है कि अपनी मित्र मंडली में हमारे प्रकाशनों का प्रचार कर हमें कृतज्ञ होने का अवसर प्रदान करें।

आपका- आबिद तबातबाई
आनरेरी सेक्रेट्री, इमामिया मिशन, लखनऊ

तौहीद

सम्पूर्ण विश्व को बिना किसी का सहयोग लिये उत्नन्न करने वाले को उसकी महिमा सहित मानने का नाम तौहीद है।

एक समय वह था जब संसार उपास्यों की अधिक्ता पर गर्व करता था परन्तु इस्लाम सदा से विश्व को उत्पन्न करने वाले ईश्वर की इकाई का प्रचार करता आया है तथा इस्लाम के पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा[स०] ने इस शक्ति तथा विश्वास के साथ ब्रह्म की इकाई का प्रचार इस ढंग से किया कि आज संसार के सभी धर्म किसी न किसी रूप से यह दावा करते हैं कि ईश्वर एक है, अकेला है और संयोग रहित है। किन्तु जिस तौहीद की शिक्षा मुहम्मद रसूलुल्लाह[स०] के सच्चे उत्तराधिकारियों ने दी है वही वास्तविक तौहीद उसी वास्तविक इस्लाम के साथ संलग्न है।

जन्म दाता का अस्तित्व

जिस प्रकार प्रत्येक कला अपने कलाकार का, प्रत्येक पुस्तक अपने रचयिता का तथा प्रत्येक इमारत अपने निर्माता का परिचय देती है, ठीक उसी प्रकार विश्व का प्रत्येक कण इस बात की गवाही दे रहा है कि उसका कोई जन्म दाता अवश्य ही है।

इस कथन को एक समान्य कोटि की बुद्धि वाला बालक तथा एक साधारण ज्ञान रखने वाला अनपढ़ भी अपनी भाषा में समझ सकता है, तथा इसी को एक दर्शन शास्त का ज्ञाता दर्शनिक सिद्धान्तों के द्वारा सिद्ध कर सकता है। जो प्रायः साधारण लोगों के लिए एक गूढ़ समस्या प्रतीत होने लगती है, किन्तु बात यही एक है कि न तो कोई कर्म बिना कर्ता के और न कोई कला बिना कलाकार के जन्म ले सकती है। अतएव इतना विशाल विश्व बिना किसी सृष्टिकर्ता के जन्म नहीं पा सकता।

जन्मदाता की सत्ता

''हम'' और हमारी ''सत्ता'' दो भिन्न संज्ञाएँ हैं। उस सत्ता के योग से हम सजीव हैं अन्यथा उससे रहित निर्जीव। अर्थात हमारी ''आस्था'' सत्ता के संयोग पर

निर्भर है। अतः हमें अपने को सास्ति बनाने के लिए सत्ता उत्पन्न करने वाले की आवश्यकता है। संसार न था और हुआ। यदि हुआ तो किसी ने उसे जन्म दिया। अब यदि विश्व को जन्म देने वाला भी हमारी ही तरह हुआ तो वह और उसका व्यक्तित्व दोनों भिन्न-भिन्न हुए। इस प्रकार वह भी अपने सास्ति के लिए दूसरे के अधीन तथा आश्रित हुआ। अतः वह भी इस सम्भाव्य जगत का एक अंश हो जाएगा। इस प्रकार यह बात स्पष्ट है कि वह विश्व को जन्म देने वाला नहीं हो सकेगा।

वह समस्त विश्व के चराचर का जन्मदाता है अगर हम उसे अपने ही समान मान लें तो वह भी हमारे ही समान नश्वर होगा अगर जन्म दाता नश्वर हुआ तो उसके द्वारा सृष्टि रचना और पालन का कोई प्रश्न नहीं उठता। अतएव यह मानना पड़ेगा कि वह अविनाशी है, अनादि तथा अतन्त है। दार्शनिक सिद्धान्त के अनुसार विश्व को रूप देने वाले का होना अनिवार्य है। इसके अतिरिक्त समस्त संसार को सम्भाव्य कहते हैं। सम्भाव्य वस्तुएं अपने उत्पन्न होने के लिए एक जन्मदाता के अधीन हैं, और जन्मदाता का होना अनिवार्य है। अतः वह निर्विवाद रूप से अपनी उत्पत्ति के लिए किसी अन्य शक्ति के अधीन नहीं है।

(अस्त्यार्थक एवम् निषेधार्थक)

स्मरण रखना चाहिये कि जितनी बुराईयाँ जितने दोष तथा जितने अवगुण होते हैं वे सब नास्ति से सम्बन्धित हैं। हम में नास्ति सम्भव है, अतः हम ने अवगुणों का होना सम्भव है। 'सत्ता' हमारी अपनी नहीं। यही हम में सबसे बड़ा अभाव है। जिससे अनेक अवगुण उत्तपन्न होते हैं। हमारी सत्ता का स्तर जितना उच्च होता है उतने ही अधिक गुण हममें उत्तनन्न होते हैं। ब्रह्म सम्पूर्ण रूप से सत्ता ही सत्ता है इसलिये वह गुणों से भिन्न नहीं हैं। वह निष्कलंक, निर्दोश एवं सर्वगुण सम्पन्न है।

(जारी)

शेष... इसलाम और इंसानी हुक़ूक़

फ़ौजियों और जंग में हिस्सा लेने वाले अवाम के हुक़ूक़ की बात कही गई, जिसमें सख़्ती से ये बात कहीं गई कि किसी जंगी क़ैदी को तकलीफ़ नहीं पहुँचाई जाएगी, किसी ज़ख़्मी को क़त्ल नहीं किया जाएगा और निहत्ते अवाम पर हमला नहीं होगा, लेकिन आप लोगों ने देखा कि जिन बातों तक दुनिया आज पहुँची है, उन हुक़ूक़ का लेहाज़ इस्लाम ने 14 सौ साल पहले ही रखा है और उन सभी हुक़ूक़ का बयान आज की दुनिया में सिर्फ़ काग़ज़ पर है, जबकि इस्लामी रहबरों ने चौदह सौ साल पहले इन पर अमल करके दिखाया है। 1949ई॰ में जिनेवा में लगातार 4 कन्वेन्शन हुए, जिनमें से हर कन्वेन्शन में पिछली ग़लतियों को दूर किया गया और कुछ नई बातों को बढ़ाया गया। इसके बाद भी 2005ई॰ तक और बातें बढ़ाई गईं जो प्रोटोकोल-प्रथम, द्वितीय और तृतीय के नाम से मशहूर हैं, लेकिन इसके बाद भी आज की तरक़्क़ी की हुई दुनिया उन जंग के आदाब तक नहीं पहुँच सकी जो इस्लाम ने बनाए हैं, न उस रहम और करम का दर्जा हासिल कर सकी कि जिस तक इस्लामी क़ानूनों की पहुँच है, जिसका एक सुबूत क़बील-ए-ख़ुज़ैमा का वाक़िआ है। मक्का की जीत के बाद रसूले अकरमस॰ ने ख़ालिद बिन वलीद की सरदारी में एक फ़ौज क़बील-ए-ख़ुज़ैमा की तरफ़ भेजी ताकि उन्हें इस्लाम की दावत दें, लेकिन जंग करने की इजाज़त नहीं दी थी। जब ख़ालिद बिन वलीद उनके इलाक़े में पहुँचे तो वह लोग हथियार लेकर सामने आ गए। ख़ालिद ने उन्हें पनाह देने का वादा किया, लेकिन जब उन्होंने अपने हथियार फेंक दिये तो उनका क़त्ले आम कर दिया। जैसे ही रसूले अकरमस॰ को इसकी ख़बर मिली आपस॰ ने आसमान की तरफ़ अपने हाथ उठाए और कहा: ''ऐ अल्लाह में ख़ालिद के इस काम से बराअत का इज़हार करता हूँ'' (अल-कामिल फ़ित्तारीख़, जि-2 पेज-182) इसके बाद हज़रत अलीअ॰ को कुछ रक़म देकर भेजा कि उनमें जो बचे हुए हैं उन्हें राज़ी करें। हज़रत अलीअ॰ ने सबके खून का बदला अदा किया। जितना उनका नुक़सान हुआ था वह सब पूरा किया। जिन बर्तनों में जानवर खाते थे यहाँ तक कि अगर कुत्तों के खाने के बर्तन जंग के बीच टूटे थे उनकी क़ीमत भी अदा की और ये सुनकर आज की तरक़्क़ी करने वाला दिमाग़ भी हैरान रह जाएगा चूँकि औरतें और बच्चे डरे हुए थे, इसलिए उन्हें भी मुआवज़ा (Compensation) दिया गया। ये दिमाग़ी तकलीफ़ का बिल्कुल नया ख़याल है जिस पर आज से चौदह सौ साल पहले इस्लाम ने अमल किया है। (बशुक्रिया रोज़नामा राष्ट्रीय सहारा (उर्दू), 11 मार्च 2011ई॰)

(जारी)

इंसान से मुताल्लिक़ इस्लाम की सोच

अल्लामा सै० मुहम्मद रज़ी साहब क़िब्ला, कराची
अनुवादकः सैय्यद सुफ़यान अहमद नदवी

इस्लाम ने दुनिया को इंसान का जो मेयार पेश किया है वह सूरए बक़रा आयत-30 में अल्लाह के उस एलान से पूरी तरह ज़ाहिर है जिसका तर्जुमा ये हैः "वह वक़्त याद करो जब तुम्हारे परवरदिगार ने फ़रिश्तों से कहा था कि मैं ज़मीन में अपना नायब बनाना चाहता हूँ" इसका मतलब यही हुआ कि ज़मीन में अल्लाह के नायब होने की हक़दार पूरी काएनात में सिर्फ़ वही मख़लूक़ मानी गई जो सही माने में इंसान कही जा सकती है और इस तरह इंसान को सारी मख़लूक़ पर बड़ाई दी गई। फ़रिश्तों को हुक्म दिया गया कि मुकम्मल इंसान यानी आदम अलैहिस्सलाम के सामने अल्लाह के सज्दे के लिए झुक जाएं। ये इस बात की खुली हुई दलील है कि मुकम्मल इंसान का दर्जा फ़रिश्तों से भी ऊँचा होता है। दुनिया इंसान के असली मक़ाम और दर्जे से बेख़बर थी। काएनात की सबसे अहम, इंसान का सर बेजान पत्थरों और मामूली जानवरों और कीड़ों-मकोड़ों के आगे झुका हुआ था। उसे ख़बर न थी कि अल्लाह ने ये सारी काएनात खुद उसी की ख़िदमत के लिए बनाई है?

न तू ज़मीं के लिए है न आसामाँ के लिए
जहाँ है तेरे लिए तू नहीं जहाँ के लिए

इस्लाम ही ने उसे बेहोशी से जगाया और जेहालत की उस नींद से जगाया और उसे उसके असली दर्जे और मरतबे की ख़बर दी। क़ुरआन के इन लफ़्ज़ों में तर्जुमाः- "और हम ने आदम की औलाद को इज़्ज़त अता की है और हम ही ने उसे खुश्की और दरिया में आने जाने की आसानिया दी हैं और हम ने उसको बेहतरीन चीज़ों का रिज़्क़ अता किया और हम ही ने उसे अपनी बहुत सी मख़लूक़ात पर बड़ी फ़ज़ीलत दी है।

अल्लाह के इस फ़रमान से इस बात का साफ़ तौर से पता चलता है कि काएनात के समाज में इंसान को कितनी बड़ाई और बरतरी और कितनी फ़ज़ीलत और ऊँचाई हासिल है जो किसी और को हासिल नहीं। इसके साथ ही क़ुरआने हकीम में ज़मीन और आसमान की बहुत सी ख़ास चीज़ों का नाम लेकर बताया गया है कि अल्लाह ने इन सब चीज़ों को इंसान ही की ख़िदमत के लिए पैदा किया है और उसके लिए उन्हें लगा दिया यानी उनकी बात मानने वाला बना दिया। जैसे सूरज, चाँद, सितारे, पहाड़, पेड, जानवर, दरिया, कश्तियाँ फिर ये भी फ़रमा दिया कि जो कुछ भी ज़मीन में पाया जाता है वह सब का सब इन्सान के लिए मुसख़्ख़र कर दिया गया है और इस से भी बढ़कर सूरए लुक़मान आयत-20 में यहाँ तक बता दिया गयाः तर्जुमाः- "क्या तुम लोग ये नहीं देखते कि अल्लाह ने तुम्हारे ही काम में लगा रखा है उन सब चीज़ों को जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में है और उसने तुम पर अपनी ज़ाहिरी और बातिनी सारी नेमतें पूरी कर दी हैं।

कोई और नहीं ये सिर्फ़ इस्लाम ही है जिसने दुनिया को इंसान के सही तसव्वुर, असली मरतबे और हक़ीक़ी मक़ाम व मंज़िल से आगाह किया और उसमें ये हौसला और जुरअत पैदा की कि वह काएनात की बड़ी और छोटी चीज़ों को सजदा करने के बजाए उन पर हुकूमत करे और उनसे अपनी जाएज़ ज़रूरतों को पूरा करे और साथ ही उनकी पैदाईश के छुपे हुए भेद को मालूम करे। वह ज़मीन के जिगर को चीर डाले, पहाड़ों

की चट्टानों को फाड़ डाले, हवाओं के चप्पे-चप्पे पर उड़े, समुन्द्रों की तह में उतर जाए और सैय्यारों पर पहुँच कर उनके अन्दर अल्लाह की निशानियों को अपनी आँखों से देख ले। ग़रज़ इंसान काएनात की किसी चीज़ की भी गुलामी के लिए नहीं पैदा किया गया बल्कि उसके पैदाईश में बलन्दी, बरतरी और सरदारी रखी गई है। उसको ज़मीन व आसमान पर भरपूर हुकूमत मिली है, उसे ताक़त व कुव्वत के न ख़त्म होने वाले ख़ज़ाने दिये गए हैं और अल्लाह की तरफ से उसको रिज़्क़ के ऐसे ज़ख़ीरे दिये गए हैं जिनमें उसकी ज़िंदगी के बाक़ी रहने और खुशहाली के राज़ छुपे हुए हैं। ये रिज़्क़ सिर्फ़ वही नहीं है जिसे खा लिया जाए बल्कि इस से मुराद हर वह ज़रूरत है जिस पर इंसान की तरक़्क़ी और ज़िन्दगी टिकी हुई है। यह वह रिज़्क़ है जो उस ''उड़ने वाले परिन्दे'' की उड़ान को कम नहीं करता बल्कि उसके लिए काएनात की बड़ाईयों को लगा देता है। काएनात की सारी ऊँचाईयाँ इंसान को इसी रिज़्क़ से मिलती हैं जो अल्लाह ने उसके लिए तैय किया है जिसे छोड़ना मौत है और जिसका हासिल कर लेना हमेशा की ज़िन्दगी है-

ऐ ताएरे लाहूती उस रिज़्क़ से मौत अच्छी
जिस रिज़्क़ से आती हो परवाज़ में कोताही

अल्लाह ने इंसान ही की पैदाईश पर कुरआने हकीम में अपने बेहतरीन ख़ालिक़ होने का इन लफ़्ज़ों में ज़िक्र फ़रमाया है- तर्जुमाः- ''अल्लाह की हस्ती बड़ी बरकत वाली है जो सारे पैदा करने वालों से बेहतर है'' फिर सूरए वत्तीन में कामिल इंसान की पैदाईश को ही ''अहसनि तक़्वीम'' यानी बेहतरीन अंदाज़ की पैदाईश का ख़िताब अता हुआ है। इस तरह इस्लाम ने कामिल इंसान का जो ख़याल पेश किया है वह ये है कि काएनात के पूरे समाज में उस से बेहतर कोई नहीं, वह काएनात का ख़ादिम नहीं बल्कि काएनात खुद उसकी ख़िदमत करने वाली है, वह उसका हाकिम है, उसका सरदार है और ज़मीन में अल्लाह का नाएब है, लेकिन इसी के साथ इस्लाम ने ये भी बता दिया है कि इंसान को उसकी असली जगह सिर्फ़ उसी वक़्त मिल सकती है जब वह अल्लाह के दिये हुए ज़रियों और ताक़तों को सही तरीक़े पर इस्तेमाल भी करे और अपने दर्जे और मक़ाम को हासिल करने की कोशिश भी करे। उसके पास ज़रिये हैं, कुव्वत व ताक़त है तो उसके चारो तरफ़ एक ज़बरदस्त तूफ़ान भी है मगर सही माने में इंसान वही है जो मुश्किलों को कुचल कर अपनी मंज़िल का रास्ता तलाश कर ले और उनमें से कोई चीज़ भी उसके लिए रुकावट न बन सके। सूरए बलद आयत-4 में इसी हक़ीक़त की तरफ़ इशारा किया गया है ये फ़रमा कर, तर्जुमाः- हम ने इंसान को बड़ी मशक़्क़त के लिए पैदा किया है और साथ ही सूरए अन्नज्म आयत 39 में ये भी फ़रमा दिया गया, तुर्जमाः- इंसान को सिर्फ़ वही मिलेगा जिसकी वह मेहनत व कोशिश करेगा। ग़रज़ इस्लाम ने इंसान की अज़मत व बलन्दी बताने के साथ ही ये बात भी बता दी है कि उसे ये बलन्दी सिर्फ़ उसी वक़्त मिल सकती है जब वह कोशिश और मेहनत करे, हाथ पर हाथ धरे बैठा न रहे बल्कि उन ताक़तों और सलाहियतों और रास्तों को काम में लाए जो अल्लाह ने उसे अता किये हैं।

इस्लाम की इस्तेलाह में हक़ीक़ी इंसान असली मोमिन होता है और हक़ीक़ी मोमिन इंसान होता है। असली मोमिन या हक़ीक़ी इंसान कभी कोशिश से ध्यान नहीं हटाता और कभी उसको मुसीबतों और मुश्किलों के तूफ़ान मायूस नहीं बनाते। वह अपने अमल से अपनी तक़दीर बनाता है और अपनी कोशिश से अपनी क़िस्मत संवारता है वह इरादे और मज़बूती का मुजस्समा हुआ करता है। आंहज़रत अपने अस्हाब से फ़रमाया करते थे ''तुम से पहले जो लोग गुज़र गए हैं उन्हें आरे से चीर कर दो टुकड़े कर दिया जाता था, उनके बदन पर लोहे की कंघियाँ चलाई जाती थीं जिसकी वजह से उनकी खाल उनके गोश्त से अलग हो जाती थी मगर ये कड़ी आज़माइशें भी उन्हें दीने हक़ से जुदा न कर सकीं।''

यही सब्र यही इरादा और मज़बूती और यही कोशिश और अमल दूसरे लफ़्ज़ों में ईमान है जिसके बग़ैर बलन्दी नहीं मिल सकती और इसी की तरफ़ कुरआने हकीम ने ये कहकर इशारा किया है, तर्जुमाः- अगर तुम में सच्चा ईमान है तो तुम ही सबसे बलन्द और सब पर ग़ालिब रहोगे। **(शेष..... पेज 14 पर)**

इस्लाम और इंसानी हुक़ूक़

क़ाएदे मिल्लत मौलाना सै० कल्बे जवाद नक़वी, जनरल सेक्रेट्री मजलिस उलमा-ए-हिन्द
अनुवादः सैय्यद सुफ़यान अहमद नदवी

(7)

इस्लाम की मुख़ालिफ़त उसकी शुरुआत से लेकर आज तक चल रही है और आगे भी चलती रहेगी। हर ज़माने की शैतानी ताक़तें इस्लाम से टकराती रही हैं और उसको नुक़सान पहुँचाने के लिए हर तरीक़ा आज़माया जा रहा है। इस ज़माने में इस नफ़रत भरी मुहिम में वैसे तो तक़रीबन हर ग़ैर मुस्लिम साझीदार और साथी है, लेकिन आगे-आगे पश्चिमी देश हैं, जिनका सरग़ना और ज़िम्मेदार अमरीका और उसका पिछलग्गू इस्राईल है। ज़ाहिरी तौर पर उनमें से कुछ की ज़बानों पर इस्लाम की तारीफ़ भी है और रमज़ानुल मुबारक के मौक़े पर इफ़्तार का एहतेमाम भी है, लेकिन छुपे तौर पर इस्लाम की बरबादी के लिए यह सब एकजुट और एक अहद से जुड़े हैं और इनके छुपे एजेण्डे की पहली बात इस्लाम को जड़ से उखाड़ फेंकना है। ज़बान व क़लम से बराबर हमले हैं कि इस्लाम में तशद्दुद है, ज़बरदस्ती है, इसके क़ानून में रहमदिली और रूहानियत नही है और इंसान के अधिकारों को बर्बाद करना इस्लाम का तरीक़ा है, जबकि हक़ीक़त में इस्लाम रहमत का दीन है, मेहरबानी नर्मी और मुहब्बत का दीन है। इसकी पहली दलील ख़ुद क़ुरआन मजीद की शुरुआत है। ख़ुदा के कलाम की शुरुआत ही लफ़्ज़ रहमान और रहीम से होती है। क़ुरआन मजीद ने मुसलमानों को हुक्म दिया है, मतलबः- ''आप बुराई को अच्छाई से दूर कीजिए'' (सूरए मोमिनून, आयत-96) यानी बुराई के जवाब में बुराई और ज़ुल्म के जवाब में ज़ुल्म की इजाज़त नहीं है। दूसरी जगह इरशाद है, मतलबः- ''ऐ पैग़म्बर[स०] ये अल्लाह की रहमत है कि आप उन लोगों के लिए नम्र दिल हैं।'' (आले इमरान, आयत-159) एक जगह पर मुसलमानों को हुक्म दिया जा रहा है, मतलबः- ''ईमान वालो! तुम सब मुकम्मल तरीक़े से अम्न व सुलह के घेरे में दाख़िल हो जाओ और शैतान के क़दम से क़दम मिलाकर न चलो यक़ीनन वह तुम्हारा खुला हुआ दुश्मन है।'' (सूरए बक़रा, आयत-208) ये आयते करीमा खुले तौर पर एलान कर रही है कि इस्लामी क़ानून की बुनियाद सुल्ह व अम्न है। क़ुरआन मजीद जंग की आग भड़काने वालों को शैतान का मानने वाला बता रहा है। यानी क़ुरआन करीम की नज़र में जंग पसंदी शैतान का तरीक़ा और अम्न और सुलह रहमान का तरीक़ा है। मुहब्बत और रहमत की किताब एलान कर रही है, मतलबः- ''उसकी निशानियों में ये ये भी है कि उसने तुम्हारा जोड़ा तुम्हीं में से पैदा किया ताकि तुम्हें सुकून हासिल हो और फिर तुम्हारे बीच मुहब्बत और रहमत क़रार दी। इसमें समझ रखने वालों के लिए बहुत से निशानियाँ पाई जाती हैं।'' (सूरए रूम, आयत-220) इंसानों के दरमियान मुहब्बत और उलफ़त की ईजाद को अल्लाह तआला ने अपने मोजिज़ों और निशानियों में शुमार किया है। अब पढ़ने वाले ख़ुद फ़ैसला करें कि ऐसे क़ानून में जिसकी बुनियाद रहमत, मुहब्बत हो तशद्दुद और आतंकवाद की जगह कहाँ पैदा होती है?

इमाम जाफ़र सादिक़ से किसी ने पूछा दीन क्या है? आप ने फ़रमायाः ''क्या दीन मुहब्बत के अलावा कुछ और है?'' फिर इमाम ने अपनी बात की दलील में क़ुरआन मजीद की आयत पेश फ़रमाई, मतलबः- ''अगर तुम अल्लाह से मुहब्बत करते हो तो रसूल[स०]

की पैरवी करो अल्लाह भी तुम्हें महबूब रखेगा।" (आले इमरान, आयत-31) यानी अमल करने की वजह, इश्क़ और मुहब्बत ही है। एक दूसरी हदीस में हैः "दीन मुहब्बत है और मुहब्बत दीन है" (मीज़ानुल हिक्मा, जि-2 पेज-215) क्या जिस दीन में हर अमल की बुनियाद मुहब्बत को क़रार दिया गया हो? जहाँ दीन पूरे का पूरा मुहब्बत हो, वहाँ बेदर्दी, मार-काट, अत्याचार और आतंकवाद के ज़रिए बेगुनाहों को मार डालने की इजाज़त हो सकती है?

आज का फ़लसफ़ा है कि मुहब्बत और जंग में हर चीज़ जाएज़ है। जंग जीत लो चाहे बहादुरी से या चालाकी और मक्कारी से, लेकिन जब इस्लामी फ़ौज जाने लगती थी तो रसूले इस्लाम[स०] उसे मुख़ातब करके फ़रमाते थे कि देखो जंग करने तो जा रहे हो, मगर हवस और चाहत को अपने दिल में जगह न देना। तुम्हारा हर अमल अल्लाह की मर्ज़ी के मुताबिक़ होना चाहिए और हर अमल में इस्लाम की बड़ाई सामने रहे। फ़रमाते थेः देखो चोरी न करना और बहाने और धोके से काम न लेना। यहाँ पर अपनों की शर्त नहीं लगाई है, यानी अपनों को धोका देना तो बहुत दूर की बात है इस्लाम जंग के मैदान में जान के दुश्मनों को भी धोका देने की इजाज़त नहीं दे रहा है। फ़रमाते थे, दुश्मन की लाशों की बेइज़्ज़ती न करना। अगर दुश्मन से कोई अहद हो जाए तो उसकी इज़्ज़त करना, कमज़ोर और बेसहारा लोगों को, बच्चों और औरतों को दुनिया से अलग-थलग लोगों को हरगिज़ क़त्ल न करना। पेड़ों को न जलाना बहुत ज़रूरी हो तो उनको काटना, दुश्मन के पानी में ज़हर न मिलाना। आपने देखा कि इस्लामी रहमत सिर्फ़ इंसानों से जुड़ी नहीं है, बल्कि इसके घेरे में बेजान चीज़ें भी आती हैं। इसलिए पैग़म्बरे इस्लाम[स०] ने हुक्म दिया कि दुश्मन के इलाक़े में हरे-भरे माहौल को नुक़सान न पहुँचाओ। अगर पेड़ काटना ज़रूरी हो तो सिर्फ़ उतना काटो जितनी ज़रूरत हो, यानी इस्लाम को भड़कती हुई जंग की आग में भी माहौल की हरियाली का ख़याल है। यहूदियों के सबसे मज़बूत क़िले ख़ैबर के घेराव को तीन हफ़्ते गुज़र चुके थे, मगर क़िले पर जीत नहीं मिल पा रही थी, यहूदी बहुत ही सख़्ती से बचाव कर रहे थे। एक चश्मा क़िले के बाहर से अन्दर की तरफ़ जाता था, जिस से यहूदी अपनी प्यास बुझाते थे। किसी ने रसूलुल्लाह[स०] को मश्वरा दिया कि अगर इस चश्मे में ज़हर मिला दिया जाए तो बिना मेहनत के जीत मिल जाएगी। रसूल[स०] ने सख़्ती से इनकार किया कि ये बुज़दिली है, इस तरह से अगर जंग जीती तो इस्लाम की जीत नहीं, बल्कि हार होगी। इसका मतलब ये है कि जंग में हर चीज़ जायज़ है, मगर इस्लाम में जंग नहीं जेहाद है और जेहाद में पहली शर्त तक़वा है। इसलिए बद्र की जंग के लिए क़ुरआन मजीद ने एलान फ़रमाया, मतलबः- ऐ मुसलमानो अगर तुम ने मैदान में सब्र किया और तक़्वे को चुना तो जीत तुम्हारी होगी। यही तक़वा है जो जंग के मैदान को इबादतगाह में बदल देता है और जंग जेहाद बन जाती है।

रसूले इस्लाम[स०] अपनी फ़ौज को ख़िताब करके फ़रमाते थे, "अगर किसी मुसलमान ने चाहे वह छोटा हो या बड़ा किसी इस्लाम के दुश्मन को पनाह दे दी तो उस पनाह देने की इज़्ज़त की जाए और उस काफ़िर या मुश्रिक को जंग के मैदान से किसी अम्न की जगह पर ले जाया जाए और उसके सामने बहुत ही मुहब्बत से इस्लाम की अच्छाईयाँ और ख़ूबियाँ पेश की जाएं। अगर वह मुसलमान हो जाए तो उसे मुसलमानों के सारे हुक़ूक़ मिल जाएंगे और वह तुम्हारा भाई है और अगर उसने इस्लाम क़ुबूल नहीं किया या सोचने समझने के लिए और वक़्त माँगा तो उसे बिना किसी नुक़सान के सही और सालिम उसके इलाक़े तक वापस पहुँचा देना और उसे किसी भी तरह की तकलीफ़ पहुँचाने का हक़ किसी मुसलमान को न होगा।' रसूलुल्लाह[स०] के सारे फ़रमान क़ुरआन मजीद के हिसाब से हैं। ज़ाहिर है कि इन सभी कामों के लिए बहुत बड़ा दिल चाहिए। बीच जंग के मैदान में जब सर कट-कट कर उछल रहे हों, ख़ून की बारिश हो रही हो, ऐसे मौक़े पर अपने दुश्मन के साथ रहम और मेहरबानी का सुलूक करने के लिए समन्दर से बड़ा सीना और पहाड़ों से ज़्यादा मज़बूत ईमान की ज़रूरत है, इसीलिए रसूलुल्लाह[स०] ने आख़िर में फ़रमायाः "इन कामों को अन्जाम देने के लिए अल्लाह तआला से मदद माँगते रहो।" (बिहरुल अनवार, जि-42 पेज 246-257)

(बशुक्रिया रोज़नामा राष्ट्रीय सहारा (उर्दू), 25 फ़रवरी 2011[ई०])

(8)

पिछले मज़मून में ये बात इस मक़ाम तक पहुँची थी कि ठीक जंग के मैदान में जब ख़ून की बारिश हो रही हो, घमासान का रन हो, तलवारें चल रही हों, सही और सच्चा मुसलमान वह है, जो इन हालात में भी अपने दुश्मन पर ज़्यादती न करे और उसके साथ रहम से पेश आए। आज की तहज़ीब और तमद्दुन का दावा करने वाली दुनिया में भी जंग के मौक़े पर दुश्मन से रहमत और मुहब्बत का सुलूक नामुमकिन बातों में से है कि जिसका हुक्म इस्लाम ने आज से 14 सौ साल पहले अपने मानने वालों को दिया है। आज भी अमरीका की सरपरस्ती में इस्राईल के बम्बारी करने वाले जहाज़, पनाह लेने वालों, कैम्पों, अस्पतालों, यतीमख़ानों, स्कूलों पर बम्बारी करते नज़र आते हैं। बोसनिया की सबसे बुरी मिसाल हमारे सामने है, जहाँ ऐसे ज़ुल्म हुए कि हैवानियत शर्म खा जाए। काश हमारी ये बातें इस्लाम पर इल्ज़ाम लगाने वालों तक पहुँच सकें। ख़ासकर उन मुसलमान बच्चों और जवानों तक पहुँचें। जिन्हें अमरीका और इस्राईल के ख़रीदे हुए मोलवी आत्मघाती हमलावर बनने पर मजबूर कर देते हैं, जिसकी वजह से अब तक लाखों बेगुनाह मुसलमानों की जानें इराक़, पाकिस्तान, अफ़ग़ानिस्तान वग़ैरा में बर्बाद हो चुकी हैं।

तारीख़ गवाह है कि जब इत्तेहादी फ़ौजियों ने जर्मन की राजधानी बर्लिन पर क़ब्ज़ा किया तो ज़ुल्मो सितम के तूफ़ान उठा दिये, यहाँ तक कि माओं की गोदों से बच्चों को छीनकर हवा में उछालते थे और गोलियों का निशाना बना देते थे, लेकिन जब रसूलुल्लाह[स०] जीत वाली शान से मक्का में दाख़िल हुए तो क्योंकि मक्का वालों ने मुसलमानों को सख़्त तकलीफ़ें दी थीं और कितने मुसलमान इन तकलीफ़ों की वजह से शहीद हो गए थे, इसलिए एक बुज़ुर्ग सहाबी हज़रत साद बिन उबादा[रज़ि०] की ज़बान से निकल गया। ''आज इंतेक़ाम और ख़ून बहाने का दिन है'' जैसे ही रसूल[स०] को ख़बर हुई उनके हाथ से झण्डा ले लिया और एलान करवायाः ''आज मेहरबानी का दिन है'' मक्का के सारे क़ातिलों और तकलीफ़ देने वालों को इकटठा करके एलान कियाः ''जाओ तुम आज़ाद हो''।

इस्लाम में सबसे पहली चीज़ सुल्ह और अम्न है और जंग की हालत बचाव की है। इस्लाम में जेहाद की रूह बचाव करना है न कि हमला, रसूले पाक[स०] की सीरत का सबसे अहम हिस्सा यही है कि कभी हमले में पहल नहीं की। इस्लामी फ़ौज के कमाण्डर से कहते हुए फ़रमाया था कि जब भी दुश्मन का सामना हो तो उनके सामने तीन बातें रखो कि इनमें से कोई एक क़ुबूल कर लेंः या इस्लाम क़ुबूल कर लें, या जिज़्या देना मन्ज़ूर कर लें या फिर जंग के मैदान से पलट जाएं। अगर इनमें से कोई एक बात क़ुबूल हो गई तो अब जंग का कोई सवाल नहीं। हज़रत अली[अ०] ने जमल की जंग में अपने फ़ौजियों से ख़िताब फ़रमाया था, ''तुम्हारी तरफ़ से न कोई तीर चलाया जाएगा, न नेज़े से वार होगा, न तुम अपनी तलवारों को न्यामों से बाहर निकालो, बल्कि हुज्जत को पूरा करो, उनके सामने दलीलें पेश करो।'' जंगे सिफ़्फ़ीन में भी अपने लश्कर के कमाण्डर मालिके अश्तर[अ०] से फ़रमाया थाः जंग तुम्हारी तरफ़ से शुरु नहीं होना है, मगर ये कि सामने वाला जंग की शुरुआत करे। अगर दुश्मन जंग शुरु करे, तब तुम्हें हथियार उठाना है'' यानी जंग की हालत बचाव करने वाली होनी चाहिए। मुसलमानों की सबसे मशहूर तारीख़ ''तारीख़े तबरी'' में हज़रत अली[अ०] के जुमले महफ़ूज़ है कि वह जब भी दुश्मन के सामने होते थे तो अपनी फ़ौज को ख़िताब करके फ़रमाते थेः ''अगर तुम्हारे सामने से तुम्हारा दुश्मन भागे तो कभी भागते हुए को क़त्ल न करना, अगर दुश्मन ज़ख़्मी हो जाए तो उसे क़त्ल न करना। उसे नंगा मत करना (अरब का तरीक़ा ये था कि क़ातिल, मक़तूल की सारी चीज़ों पर क़ब्ज़ा कर लेता था, यहाँ तक कि कपड़े भी उतार लेता था) जब दुश्मनों के घरों तक पहुँचो तो उनके घर वालों की बेइज़्ज़ती न करना, बिना इजाज़त उनके घर में दाख़िल न होना, उनके घरों को न लूटना, किसी औरत को तकलीफ़ न पहुँचाना, अगर वह तुम्हें गालियाँ भी क्यों न दे रही हो, यहाँ तक कि चाहे तुम्हारे कमाण्डरों और सरदारों को बुरा-भला कह रही हों।'' (तारीख़े तबरी, जि-5 पेज-10)

दूसरी जंगे अज़ीम की हौलनाकियों के बाद 12 अगस्त 1949[ई०] में जिनेवा में एक कान्फ्रेंस में तजवीज़ पास हुई, जिसमें जंगी क़ैदियों, जंग में ज़ख़्मी होने वाले

(शेष..... पेज 4 पर)

लीबिया जहाँ कुँओं से तेल नहीं ख़ून उबल रहा है

जनाब शकील हसन शमसी साहब "राष्ट्रीय सहारा" देहली
अनुवादकः सैय्यद सुफ़यान अहमद नदवी

पश्चिम एशिया में जो कुछ हो रहा है उसके बारे में ज़हन में कई सवाल उभरते हैं जैसे कि क्या ये इस्लामी इन्क़ेलाब है? पब्लिक के जागने की कोई लहर है? पब्लिक का वक़्ती जुनून है? कोई गहरी साज़िश है? आमिरों, शाहों और फ़ौजी जनरलों के सितारे गर्दिश में हैं? ख़रबूज़े को देखकर ख़रबूज़ा रंग पकड़ रहा है? दबी और कुचली हुई पब्लिक के लिए सर उठाकर जीने का इलाही हुक्म आ गया है? साम्राज ने अपने जो एजेन्ट मुसलमानों पर मुसल्लत किए थे उन एजेन्टों के ख़ातमे का बिगुल बज गया है? या अल्लाह की तरफ़ से ज़ालिमों की जो रस्सी बढ़ाई गई थी, उसके कसने के दिन आ गए हैं? इनमें से किसी एक सवाल का जवाब वक़्त ज़रूर देगा तब ही मालूम होगा कि इतनी बड़ी तबदीली की असल वजह क्या थी। सारी दुनिया हैरान है कि एक साथ इतने मुल्कों में अचानक इन्क़ेलाब के ढोल कैसे बजने लगे? आज तक कभी ऐसा नहीं हुआ कि फ्रांस के इन्क़ेलाब ने जर्मनी में अपनी सोच पहुँचा दी हो या फिर चीन के सुर्ख़ इन्क़ेलाब का असर हिन्दुस्तान में महसूस किया गया हो? ये अलग बात है कि इन इन्क़ेलाबों का थोड़ा बहुत असर आसपास के मुमालिक में बसने वाले कुछ लोगों के दिलों पर हुआ, लेकिन अवामी तहरीक की शक्ल में किसी इन्क़ेलाब ने कभी जगह नहीं बनाई।

अलबत्ता ईरान के इस्लामी इन्क़ेलाब के बाद दुनिया के कई मुल्कों ने पहली बार इस बात की शिकायत की कि ईरान इस्लामी इन्क़ेलाब को उनके यहाँ पहुँचाने की कोशिश कर रहा है और यह इन्क़ेलाब लेबनान और फ़िलस्तीन में पहुँचा भी, जहाँ हिज़्बुल्लाह और हमास जैसी इन्क़ेलाबी जमाअतें इस्राईल के ज़ालिम हुक्मरानों से टकराने को तैयार हो गईं, लेकिन ईरान का इन्क़ेलाब भी इस तरह आगे नहीं बढ़ सका, जिस तरह से ट्युनिशिया और मिस्र का इन्क़ेलाब आगे बढ़ा। ट्युनिशिया और मिस्र में जो कुछ हुआ और जितनी तेज़ी से हुआ उसकी न तो किसी को उम्मीद थी न ही किसी ने सोचा था कि इतनी मज़बूत हुकूमतें एक हवा के झोंके के साथ सूखे हुए पत्तों की तरह उड़कर बिखर जाएंगी? ट्युनिशिया के इन्क़ेलाब ने सिर्फ़ एक शख़्स की जान की क़ीमत पर अपने लिए कामयाबी हासिल की, मिस्र वाले इतने ख़ुश क़िस्मत नहीं थे, उनके यहाँ फ़ौज का एक हिस्सा पब्लिक के साथ रहा फिर भी 350 लोगों की जानें इस इन्क़ेलाब की नज़र हो गईं, लेकिन अब लीबिया के हुक्मरान मुअम्मर अल-क़ज़ाफ़ी, यमन के डिक्टेटर सालेह बिन अली और बहरैन के शाह हमाद बिन ईसा अल-ख़लीफ़ा ने अपने शहरियों पर गोलियों की बारिश करके इससे भी बड़ी तादाद में लोगों की जानें लेने का फ़ैसला कर लिया। ख़ास तौर पर लीबिया के हुक्मरान मुअम्मर अल-क़ज़ाफ़ी के बेटे सैफ़ुल इस्लाम ने एक टेलीवीज़न बयान में ये कहकर हलचल मचा दी कि वह तब तक इस अवामी तहरीक का मुक़ाबला करेंगे जब तक कि लीबिया का आख़िरी मर्द और आख़िरी औरत बाक़ी है। इस जुमले से बाप बेटे के नापाक इरादों का अंदाज़ा लगाया जा सकता है। ये बात और है कि सैफ़ुल इस्लाम के हाथों में इस्लामी तलवार नहीं बल्कि डिक्टेटर की तलवार है, जिसके ज़रिये वह अपने बाप की जानशीनी का ख़्वाब देख रहा है।

क़ज़ाफ़ी को लीबिया पर हुकूमत करते हुए 40 साल हो चुके हैं। याद रहे कि लीबिया के देहाती समाज

में पैदा होने वाले बुज़ुर्ग अबु मनियार अल-क़ज़ाफ़ी को शुरु से ही लीबिया के लोग एक जोशीले और क़ौम परस्त नौजवान की शक्ल में पहचानते हैं, उन्होंने अपनी शख़्सियत को इस तरह ढाला कि लोग उनको लीबिया का अज़ीम सपूत मानें। क़ज़ाफ़ी मिस्र के हुक्मरान जमाल अब्दुन्नासिर की पॉलीसियों से बहुत मुतास्सिर थे और नहरे सोईज़ के क़ौमियाए जाने के सिलसिले में जो मसला मिस्र में पैदा हुआ, उसमें इस्राईल के ख़िलाफ़ सभी अरब मुल्कों में एहतेजाजी मुज़ाहरे हुए। मुअम्मर अल-क़ज़ाफ़ी ने लीबिया में होने वाले इस्राईल मुख़ालिफ़ मुज़ाहरों में बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया बाद में मुअम्मर अल-क़ज़ाफ़ी ने आला तालीम हासिल की और लीबिया की फ़ौज में नौकरी हासिल की और कर्नल के ओहदे तक तरक़्क़ी की। 1967 में इस्राईल के हाथों अरब मुल्कों की शर्मनाक हार ने मुअम्मर अल-क़ज़ाफ़ी के दिलो दिमाग़ को भी मुतास्सिर किया और 1969 में उन्होंने लीबिया के हुकमरान इदरीस शाह की हुकूमत का तख़्ता उस वक़्त पलट दिया, जब वह इलाज के लिए तुर्की गए हुए थे। कर्नल क़ज़ाफ़ी ने अपने मुल्क से शाही हुकूमत ख़त्म करके उसको एक जमहूरी मुल्क बनाने का एलान किया, लेकिन ऑफ़ीशियल नाम बदले जाने के अलावा मुल्क के निज़ाम में कोई तबदीली नहीं आई। लीबिया शहंशाहियत की ज़ंजीरों से निकलकर एक फ़ौजी के जाल में गिरफ़्तार हो गया। नासिर के मरने के बाद क़ज़ाफ़ी ने एक बड़े और ऊँचे लीडर बनने का ख़्वाब देखा और नासिर की जगह लेने की कोशिश की। 1972 में क़ज़ाफ़ी पर म्युनिख़ ओलम्पिक में इस्राईली खिलाड़ियों का क़त्ल करने वालों को साज़ो सामान दिलाने का इल्ज़ाम लगाया गया। इसी साल क़ज़ाफ़ी ने दुनिया को ये कहकर चौंका दिया कि शाम, लीबिया और मिस्र एक होना चाहते हैं, पड़ोस के अरब मुल्कों में इस एलान से काफ़ी हलचल पैदा हो गई, लेकिन दो साल की अंथक मेहनत भी काम न आई और तीनों मुल्कों ने एक होने की शर्तों को न मानते हुए एक होने की राय का कफ़न-दफ़न कर दिया लेकिन क़ज़ाफ़ी का हीरो बनने का शौक़ ख़त्म नहीं हुआ और वह तरह-तरह के ड्रामे करते रहे। 1978 में उन पर इल्ज़ाम लगा कि लेबनान के इंक़ेलाबी शिया लीडर मूसा सद्र को उन्होंने ग़ायब करवाने में सी०आई०ए० की मदद की है, लेबनानी शियों का कहना था कि मूसा सद्र अपने दो साथियों अब्बास बदरुद्दीन और शैख़ मुहम्मद याक़ूब के साथ जब लीबिया में तिरिपोली के हवाई अड्डे पर उतरे तो क़ज़ाफ़ी ने उनका अपहरण करवाने के बाद क़त्ल करवा दिया, हालांकि क़ज़ाफ़ी ने बहुत सख़्ती से इनकार किया लेकिन किसी को यक़ीन नहीं आया कि उनके ग़ायब होने में क़ज़ाफ़ी का हाथ नहीं है। 1973 में पड़ोसी हुकूमत तशाद (जिसको अंग्रेज़ी में चाड लिखा जाता है) से एक जज़ीरे की मिलकियत को लेकर होने वाले झगड़े को इस तरह सुलझाने की कोशिश की कि तशाद पर क़ब्ज़ा ही कर लिया, लेकिन बाद में अन्तर्राष्ट्रीय दबाव की वजह से उनको अपनी फ़ौजें तशाद से हटाना पड़ीं, लेकिन ये बात हैरान कर देने वाली है कि ईरान के इस्लामी इन्क़ेलाब की क़ज़ाफ़ी ने खुलकर हिमायत की और बाद में ईरान पर इराक़ की राष्ट्रपति सद्दाम के ज़रिए चढ़ाई किये जाने की भी क़ज़ाफ़ी ने खुलकर मज़म्मत की। इसकी वजह शायद ये भी थी कि क़ज़ाफ़ी की अमरीका से दुश्मनी की शुरुआत हो गई थी और चूँकि दुश्मन का दुश्मन दोस्त होता है, इसीलिए उन्होंने इलाक़े में अमरीका के सबसे बड़े दुश्मन ईरान की तरफ़दारी की। उस वक़्त के अमरीकी राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन ने क़ज़ाफ़ी की पॉलीसियों से जल भुनकर उनको पश्चिम एशिया का 'पागल कुत्ता' कहकर मुख़ातब किया था। क़ज़ाफ़ी ने अमरीका और ब्रिट्रेन की ज़बरदस्त मुख़ालफ़त करके खुद को एक अरब हीरो के रूप में आम अरबों के सामने पेश किया, बल्कि यूँ कहा जाए कि उन्होंने इन सब हरकतों की आड़ में अपनी हुकूमत की कश्ती को डूबने से बचाए रखा। इस बीच अमरीका ने कई बार लीबिया के पेट्रौल बोट्स को निशाना बनाया। 1990 में एक अमरीकी जहाज़ को उड़ाए जाने के मामले में फिर एक बार क़ज़ाफ़ी लाइट में आए और अमरीका से टकराने की कोशिश करने में लग गए। असल में क़ज़ाफ़ी की सिर्फ़ यही कोशिश थी लीबिया की पब्लिक पर चाहे जो भी

गुज़रे, लेकिन वह सारी दुनिया के मुसलमानों में अमरीका और इस्राईल के ख़िलाफ़ जो नफ़रत पैदा हो रही है, उसको कैश करते रहें। इसमे काफ़ी वक़्त तक वह कामयाब भी रहे, लेकिन लाकरबी मामले में अमरीका के साथ-साथ अन्तर्राष्ट्रीय बिरादरी के दबाव ने क़ज़ाफ़ी को एकदम तोड़कर रख दिया और फिर उन्होंने पश्चिमी ताक़तों के सामने सर झुकाने का फैसला किया। ज़ाहिर है कि जिस चीज़ को बुनियाद बनाकर क़ज़ाफ़ी ने इतने दिनों तक लीबिया के अवाम को बेवक़ूफ़ बनाए रखा, उस से पीछे हटने के बाद उनकी हुकूमत की तरफ़ पब्लिक का ध्यान लगना ही था और 42 साल तक लीबिया की पब्लिक पर अपनी मनमानी पॉलीसियाँ थोपने वाले इस हुक्मरान और उसके बेटे का दिल अभी भी भरा नहीं है अभी भी दोनों की तमन्ना है कि वह लीबिया की हुकूमत पर क़ब्ज़ा जमाए रहें। क़ज़ाफ़ी ने लीबिया की पब्लिक के लिए जितनी संगदिली दिखाई है, इसकी उम्मीद किसी को नहीं थी। इस वक़्त लीबिया में जिस तरह पब्लिक को क़त्ल किया जा रहा है, उसको देखकर लगता है कि लीबिया की पब्लिक की आँखों पर अमरीका की दुश्मनी का जो पर्दा डाल कर वह खुद को लीबियाई पब्लिक का मसीहा बनाकर पेश कर थे वह सिवाए हुकूमत की हवस के कुछ और न था। लीबिया से जो ख़बरें आ रही हैं उन से मालूम हो रहा है कि वहाँ हवाई जहाज़ों और हेलीकाप्टरों के ज़रिए पब्लिक पर फ़ायरिंग की जा रही है और लोगों की लाशों को बुलडोज़रों के ज़रिए सड़कों से हटाया जा रहा है। पीर के दिन तो एक खुशख़बरी भी आई थी कि कर्नल क़ज़ाफ़ी ने भागने का रास्ता चुन लिया है और वह अब वेनूज़ुएला की तरफ़ चल दिये हैं, जहाँ उनके क़रीबी दोस्त शावेज़ उनकी मेहमानी के लिए मौजूद हैं, लेकिन इस बात को झुठलाते हुए क़ज़ाफ़ी ने कहा कि वह अभी तिरिपोली में ही हैं, जिसका मतलब यही लिया जा रहा है कि कर्नल क़ज़ाफ़ी लीबिया के क़ब्रिस्तानों में और नौजवानों को दफ़न करने की सोच में हैं। अपने बेटे को हुकूमत में देखने की तमन्ना दिल में रखने वाले क़ज़ाफ़ी अभी कितनी लीबियाई माओं की जिगर के टुकड़ों को क़ब्र के अन्धेरों में उतारेंगे मालूम नहीं, लेकिन ये बात तै है कि अब क़ज़ाफ़ी के पास हुकूमत छोड़ने के अलावा कोई रास्ता नहीं है। पश्चिम एशिया में जो तूफ़ान आया है अगर इसकी सख़्ती को वह समझ लें तो शायद उनकी और उनके ख़ानदान की जान बच जाए वरना कोई दूर नहीं कि तेल के कुँओं से उबलने वाला ये पब्लिक का ख़ून उनको और उनके ख़ानदान को डुबो दे।

(बशुक्रिया रोज़नामा राष्ट्रीय सहारा (उर्दू) 23 फ़रवरी 2011ई०)

इंटरनेशनल वेमन्स-डे के सौ साल

जिस तरह यूरोप वालों ने मदर्स-डे, फादर्स-डें और वेलन्टाइन-डे जैसे कुछ ख़ास दिन अलग किये हैं उसी तरह उन्होंने हर साल 8 मार्च के दिन को इंटरनेशनल वेमन्स-डे क़रार दिया। यूरोप वालों को औरतों की याद 1910ई० में आई और उन्होंने डेनमार्क की राजधानी कोपेन हैगन में होने वाली सोशलिस्ट औरतों की दूसरी सालाना कान्फ्रेंस के मौक़े पर ये फ़ैसला किया कि साल में कम से कम एक दिन तो औरतों के साथ अच्छे सुलूक के लिए ख़ास कर ही दिया जाना चाहिए। इसी कान्फ्रेंस में फ़ैसला हुआ कि हर साल इंटरनेशनल वेमन्स-डे मनाया जाएगा। इस कान्फ्रेंस के बाद कई मुल्कों ने अपने यहाँ एक दिन तै कर लिया कि वह इंटरनेशनल वेमन्स-डे मनाएंगे, लेकिन किसी एक तारीख़ पर इत्तेफ़ाक़ नहीं हो सका इसलिए अलग-अलग मुल्कों में अलग-अलग तारीख़ों में ये दिन मनाया जाने लगा।

शुरु के दिनों में इसको इण्टरनेशनल वर्किंग वेमन्स-डे के रूप में मनाया जाता था। 1911ई० में जर्मनी में पहला इंटरनेशनल वेमन्स-डे मनाया गया लेकिन रूस के इंक़ेलाब के बाद पहली बार 1917ई० में हक़ीक़ी तौर पर वेमन्स-डे को मनाने की तक़रीबों को सरकारी सरपरस्ती हासिल हुई और बाक़ायदगी से ये दिन मनाया जाने लगा।

लेकिन ये दिन काम-काज करने वाली औरतों के लिए ख़ास था और इस दिन को एक जश्न के तौर पर मनाए जाने का जवाज़ भी था क्योंकि एक ज़माने में औरतों को दफ़्तरों, दुकानों और फैक्ट्रियों में काम करने का हक़ नहीं था। औरतों को घर की ख़ूबसूरती समझा जाता था उनको मर्दों ने इस तरह बाँध रखा था कि वह

कारोबारी तौर पर हमेशा मर्दों पर टिकी रहें और कभी भी आज़ादी के साथ अपनी ज़िंदगी का कोई फैसला न ले सकें। पुराने ज़माने में ज़रिये भी ऐसे न थे और ज़िन्दगी गुज़ारने के लिए इतने सरमाए की ज़रूरत भी नहीं थी इसलिए औरतों का काम करना न करना इतना अहम भी नहीं था इसलिए जब यूरोप में औरतों को काम करने का हक़ मिला तो उनका जश्न मनाना फ़ितरी था। बहरहाल अगर इस दिन की शुरुआत पर नज़र डालें तो उस हिसाब से उस दिन को सौ साल हो गए हैं और इसी वजह से सारी दुनिया में ये दिन बहुत ज़्यादा जोश के साथ मनाया जा रहा है।

इस्लामी दुनिया या मुसलमानों से इसका कोई लेना-देना नहीं था हिन्दुस्तान में भी इसकी कोई अहमियत नहीं थी लेकिन जब 1977ई० में संयुक्त राष्ट्र की जनरल असेम्बली ने 8 मार्च को इंटरनेश्नल वेमन्स-डे और आज़ादी का दिन क़रार देकर उनको UN Day for women's Right and International Peace का नाम दिया तो फिर दुनिया भर में सब मुल्क ही इसको मनाने लगे। हमारे मुल्क में भी ये दिन इसी वजह से मनाया जाने लगा कि इसको संयुक्त राष्ट्र ने औरतों का दिन क़रार दिया है हालांकि इसके नाम रखने की वजह समझ में नहीं आई कि ये 8 मार्च को ही क्यों मनाया जाता है, क्योंकि हिन्दुस्तान में मनाने के लिए बहुत सी ऐसी औरतों का जन्म-दिन का मौक़ा था जबकि इस दिन को मनाया जा सकता था। वैसे ईरान में ये दिन मनाने के लिए पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद की साहबज़ादी हज़रत फ़ातिमास० के जन्म-दिन को चुना गया है और वहाँ के शम्सी कैलेण्डर के हिसाब से ये दिन 22 बहमन के रोज़ मनाया जाता है।

मेरे ख़याल में ये दिन कब मनाया जाए और कब न मनाया जाए इस पर बहस करना बेकार है बात इस पर होनी चाहिए कि क्या किसी एक दिन को हम औरतों के नाम ख़ास करके अपने फ़राएज़ अदा करने से अलग हो जाते हैं? क्या इतना काफ़ी है कि 8 मार्च को कुछ फंक्शन हों और कुछ अख़बारों में मरकज़ी और सूबाई सरकारों की तरफ़ से इस बारे में एडर्वटाइज़ छाप दिये जाएं बस? क्या इतना काफ़ी है कि उसी दिन अगर सुप्रीमकोर्ट का फ़ैसला मुम्बई की एक नर्स अरूना शान बाग को अपनी मर्ज़ी की मौत का हक़ न दे तो हम उसको औरतों के हुक़ूक़ से जोड़कर उसे वेमन्स-डे का हिस्सा बना दें। पहली बात तो ये है कि मेरे ख़याल में किसी एक दिन को वेमन्स-डे का नाम देकर हम औरतों की अज़मत को बढ़ाने के बजाए घटाने का काम ज़्यादा अंजाम दे रहे हैं। अल्लाह तआला ने जिस औरत के रहम में तमाम इंसानों को परवरिश पाने का मौक़ा दिया और जिसको उसने ईसार और मुहब्बत का एक ऐसा नमूना बनाकर पेश किया जिसका मुक़ाबला कोई मर्द नहीं कर सकता उसके लिए सिर्फ़ एक दिन ख़ास किया जाए? ये करम है या सितम?

हमारी ज़िंदगी का हर लम्हा अपनी माओं का एहसान मानने वाला है तो हम एक दिन उसके नाम से मंसूब करके कौन सा आसमान ज़मीन पर उतारे ले रहे हैं? ख़ास तौर पर हिन्दुस्तानी समाज जहाँ आज भी औरतों को तरह-तरह के ज़ुल्मो सितम का शिकार होना पड़ रहा है। वह हिन्दुस्तानी सोसाइटी जो लड़की की विलादत पर आँसू बहाती है और लड़के के पैदा होने पर मुस्कुराती है और वह हिन्दुस्तानी समाज जो लड़कों को जन्म देने वाली माओं को ख़ुशक़िस्मत और लड़की को जन्म देने वाली माओं को मनहूस समझता हो वहाँ क्या इस दिन की तक़रीबों की कोई अहमियत है? जिस मुल्क में माँ के पेट में ही चोरी छिपे लड़कियों से जीने का हक़ छीन लेने का संगीन गुनाह आज भी धड़ल्ले से होता हो, जिस मुल्क में ट्रेनों, बस स्टैण्डों, कचरे के डब्बों और फुटपाथों पर आज भी नई पैदा होने वाली लड़कियाँ लावारिस पड़ी हुई मिलती हों वहाँ क्या वेमन्स-डे मनाए जाने का कोई मतलब है?

वैसे तो यहाँ बातें तो बड़ी-बड़ी की जाती हैं कि कहा जाता है कि इस मुल्क में औरत को देवी का दर्जा हासिल है लेकिन औरत का हाल क्या है वह क़दम-क़दम पर नज़र आता है किस तरह बेवा औरतों की बेइज़्ज़ती और हंसी होती है। किस तरह बूढ़ी माओं को उनके ही बेटे मुक़द्दस समझे जाने वाले शहरों में छोड़ आते हैं। किस तरह लड़कियों को तालीम और तरबियत से महरूम रखने का सिलसिला आज भी जारी है? ये सब

अपनी ज़बान से बयान करता है यहाँ के हालात को और ख़्वातीन की बदहाली को। अफ़सोस की बात ये है कि औरतों का इस्तेहसाल किसी ख़ास फ़िरक़े तक घिरा हुआ नहीं है बल्कि वह क़ौमें भी इसमें शामिल हो गई हैं जिनके मज़हब ने माँ के पैर के नीचे जन्नत दिखाई है। वह लोग भी औरतों को उनके हुक़ूक़ से महरूम करने लगे हैं जिनको मालूम है कि उम्मुल मोमिनीन हज़रत ख़दीजा[अ०] अपने ज़माने की अरब की सबसे मशहूर ताजिरा औरत थीं। इस क़ौम का एक गिरोह भी औरतों के इस्तेहसाल में लगा है जिसको मालूम है कि अल्लाह ने मर्द और औरत को बराबर के हुक़ूक़ दिये हैं।

अल्लाह को एक मानने वालों पर हिन्दुस्तानी समाज का रंग ऐसा चढ़ा है कि अगर किसी के घर में चार लड़कियाँ हैं तो वह भी अपने आपको बदक़िस्मत समझ कर हर वक़्त तक़दीर को कोसता रहता है। अल्लाह ने औरतों को जो हुक़ूक़ दिये हैं उनको समाजी बंदिशों के नाम पर हड़पना और औरतों को को वह आज़ादियाँ जो इस्लाम ने अता की हैं उनको रस्मों के नाम पर ख़त्म करना एक आम सी बात हो गई है। हमारे सारे समाज में हिन्दुस्तानी रस्में इस तरह रच-बस गई हैं कि कभी-कभी हम ये समझने लगते हैं कि ये कोई रस्म नहीं बल्कि इस्लाम का कोई हुक्म है। ख़ास तौर पर शादी-ब्याह की रस्मों में ऐसी-ऐसी चीज़ें देखने को मिलती हैं कि हैरत होती है। अगर नाक में नथ नहीं हो तो निकाह नहीं होगा, सुर्ख़ जोड़ा अगर सुसराल से नहीं आया तो लड़की दुलहन नहीं बनेगी, बड़ा सा सेहरा नहीं होगा तो नौशा मियाँ अपने घर से नहीं निकलेंगे। माँ-बाप को लगेगा ही नहीं कि घर में शादी हो रही है और फिर लड़की की रुख़सती के वक़्त जब तक सारा गाँव आँसू नहीं बहाएगा लड़की के घर वालों को लगेगा ही नहीं कि लड़की चली गई। क्या शादियों में इस तरह रो कर हम भी उसी अक़ीदे का इज़हार नहीं करते कि हम ने लड़की को दान कर दिया और अब इस पर हमारा कोई हक़ नहीं वह ग़ैर की हो गई अब उस पर माँ-बाप को कोई हक़ नहीं? क्या इस्लाम ने ऐसा कोई हुक्म दिया है कि जिस से ये तै हो सके कि शादी के बाद लड़की पर माँ-बाप का कोई हक़ नहीं रहता?

औरतों के मामले में इस्लामी क़ानूनों की धज्जियाँ उड़ाए जाने की उस वक़्त तो हद हो गई जब हरियाना की एक मुस्लिम पंचायत ने एक ही गोत्र में शादी किये जाने की शदीद मुख़ालिफ़त की। हालांकि रसूले अकरम[स०] ने अपनी लाडली बेटी हज़रत फ़ातिमा ज़हरा[स०] की शादी अपने सब से क़रीबी रिश्तेदार हज़रत अली[अ०] से की, लेकिन हमारे हिन्दुस्तानी समाज का रंग एक मुस्लिम पंचायत पर ऐसा ग़ालिब हुआ कि उन्होंने गोत्र जैसे ग़ैर इंसानी फ़लसफ़े को मान लिया। ख़याल रहे कि इसी गोत्र के नाम पर आज हरियाना, राजस्थान और पंजाब में आबाद लड़कियों की ज़िंदगी अजीरन हो गई है और कोई दिन ऐसा नहीं जाता कि जब दोचार लड़कियाँ किसी गाँव में ख़ामोशी से मार न दी जाती हों।

हम जिस समाज में रह रहे हैं उसमें औरत के ख़िलाफ़ जुर्म करने की एक ख़ास सोच मौजूद है और इस सोच को बदलने के लिए किसी एक दिन को औरतों के नाम करके कोई फ़ायदा होने वाला नहीं है। हमको हर दिन औरतों के जाएज़ हुक़ूक़ उन तक पहुँचाने के लिए काम करना होगा। ख़ास तौर पर मुस्लिम उलमा को इस मामले में एक भरपूर मुहिम चलाना होगी जिसके तहत औरत को वह दर्जा मिल सके जो इस्लाम ने उसको दिया है।

(बशुक्रिया रोज़नामा राष्ट्रीय सहारा (उर्दू) 9 मार्च 2011[ई०])

शेष इंसान से मुताल्लिक़..........

सरवरे काएनात[स०] के एक सहाबी के बेटे का इंतेक़ाल हो गया था उसके ग़म में उन्होंने अपना सारा कारोबार छोड़ दिया और अपने घर के एक हिस्से में दिन रात इबादत करने लगे। हुज़ूरे अनवर[स०] को इसकी ख़बर लगी तो आप ने फ़रमाया, तर्जुमाः- ''अल्लाह ने हमें दुनिया को बिल्कुल छोड़ देने का हुक्म नहीं दिया है। बल्कि मेरी उम्मत के लिए रहबानियत यानी दुनिया को छोड़ देना अल्लाह के रास्ते में ज़बरदस्त कोशिश व मेहनत का नाम है।'' मतलब ये हुआ कि इस्लाम के नज़दीक इंसान को उसका सही मक़ाम और दर्जा उसी वक़्त मिल सकता है जब वह अपने आपको उसके लायक़ बना सके।

मुख्य समाचार

बहरैन में अवाम पर हो रहे अत्याचार के ख़िलाफ़ लखनऊ में ज़बरदस्त एहतेजाज

17 मार्च 2011ई० जुमेरात को क़ाएदे मिल्लत मौलाना सै० कल्बे जवाद साहब ने एक प्रेस कान्फ्रेंस में बहरैन में निहत्ते अवाम पर हो रहे अत्याचार के ख़िलाफ़ एहतेजाज किया। क़ाएदे मिल्लत ने बहरैन के हालात पर तशवीश ज़ाहिर करते हुए कहा कि बहरैन में पहले तो अवाम का क़त्लेआम किया गया उन पर गोलियाँ बरसाईं और अब वहाँ सऊदी हुकूमत की मदाख़लत बड़े बोहरान की वजह बन सकती है जिसके ख़तरनाक और तबाही वाले नतीजे सामने आएंगे। क़ाएदे मिल्लत ने कहा कि मिस्र, ट्युनिश और कई इस्लामी मुल्कों में अवाम जाग चुके हैं और वहाँ के लोग पुरअम्न तरीक़े से एहतेजाज कर रहे हैं लेकिन बहरैन में जिस तरह गोलियाँ बरसाकर क़त्लेआम किया गया या आले सऊद के साथ मिलकर अवाम का ख़ून बहाया गया ये अक़वामे मुत्तहेदा के क़ानूनों की ख़िलाफ़वर्ज़ी है जिसे बहरैनी, सऊदिया और इमारात हुकूमतें अपने साम्राजी और सहयूनी आक़ाओं के इशारों पर अंजाम दे रही हैं। क़ाएदे मिल्लत ने अक़वामे मुत्तहेदा के साथ-साथ सभी आलमी इदारों से भी अपील की है कि वह बहरैन के मसले पर ख़ामोश तमाशाई न बने रहें बल्कि वहाँ की अवाम की मदद करने के लिए इक़दामात करें।

क़ाएदे मिल्लत ने अमरीका और इत्तेहादी मुमालिक की दोहरी पॉलीसी की मज़म्मत करते हुए कहा कि ईरान जो एक जमहूरी मुल्क है उसके ख़िलाफ़ बराबर साज़िशें की जा रही हैं और पाबन्दियाँ लगा रखी हैं और ख़ानदानी शाही हुकूमतें जो बरसों से अवाम का ख़ून चूस रही हैं और ज़ुल्म व ज़्यादती कर रही हैं उनके ख़िलाफ़ कोई इक़दाम न करके उनकी मदद करना कहाँ का इंसाफ़ है? क़ाएदे मिल्लत ने कहा कि तमाम इस्लामी हुकूमतों में अवामी और जमहूरी हुकूमतें क़ायम होना चाहिए ताकि साम्राजी और सहयूनी ताक़तें उनका शोषण न कर सकें। उन्होंने कहा कि जब हुकमरान बेहिस और ऐश व आराम में फंसकर अवाम से बेख़बर हो जाते हैं तो जनता जाग कर अपने अधिकार हासिल करने की कोशिश करती है।

और 18 मार्च को जुमे की नमाज़ के बाद तारीख़ी आसिफ़ी जामा मस्जिद लखनऊ में क़ाएदे मिल्लत मौलाना सै० कल्बे जवाद की क़यादत में बहरैनी हुकूमत और आले सऊद के ख़िलाफ़ पुरज़ोर एहतेजाजी मुज़ाहेरा हुआ इस मुज़ाहरे में बड़ी तादाद में मुज़ाहिरीन ने अमरीका, इस्राईल, सऊदी और बहरैनी हुकूमत के ख़िलाफ़ फ़लक शिगाफ़ नारे लगाए। इमामबाड़ा आसिफ़ी के बाहर मुज़ाहिरीन को ख़िताब करते हुए क़ाएदे मिल्लत ने कहा कि आले सऊद अमरीकी एजेण्ट हैं और 1918 से आज तक सऊदी हुक्मरानों ने मुसलमानों का ख़ून बहाया है और उनकी बुज़दिली का हाल ये है कि कभी भी इस्राईल के ख़िलाफ़ होने वाली जंगों में मुसलमानों का साथ नहीं दिया मगर आज बहरैन में निहत्ते मुसलमानों के क़त्ले आम के लिए अपनी फ़ौजें भेज दीं। क़ाएदे मिल्लत ने कहा कि अरब इमारात के हुकमरान अमेरिकन एजेण्ट हैं और साम्राजी व सहयूनी आक़ाओं के इशारों पर काम करते हैं।

हमारा आइडियल इमाम ख़ुमैनी और इंक़ेलाबे इस्लामी है: बहरैनी मुज़ाहिरीन

मैदान लू-लू में मौजूद मुज़ाहिरीन ने एलान किया है कि बहरैनी अवाम ने इमाम ख़ुमैनी और ईरान के इस्लामी इंक़ेलाब को नमूना बनारक हुकूमत के ख़िलाफ़ क़याम किया है। मुज़ाहिरीन ने मैदाने शोहदा में इज़हारे ख़याल किया कि 14 फ़रवरी के शोहदा ने इस इंक़ेलाब और क़याम का आग़ाज़ किया था और वह इंक़ेलाबे ईरान और इमाम ख़ुमैनी के अक़वाल, ट्यूनिश और मिस्र के इंक़ेलाब से दर्स लेते हुए अपनी तहरीक को जारी रखेंगे। कुछ मुज़ाहिरीन ने इस इक़ेंलाब को जवानों से निस्बत देते हुए कहा कि यह वह जवान हैं जो बहरैन की हुकूमत का तख़्ता उलटना चाहते है, ये इमाम ख़ुमैनी के मानने वाले हैं और मौरूसी हुकूमत के हक़ में नहीं है बल्कि एक ऐसी हुकूमत चाहते हैं जो अवाम की हुकूमत हो।

अहलेसुन्नत की अहम शख़्सियतों ने आयतुल्लाह सीस्तानी म०ज़ि० से मुलाक़ात की

मुसलमानों के दरमियान तफ़रक़े से सिर्फ़ सहयूनी रियासत को फ़ायदा पहुँचता है और सहयूनी रियासत मुसलमानों के दरमियान तफ़रक़ा और इख़्तेलाफ़ से फ़ायदा उठाती है। इराक़ के बुज़ुर्ग मरज-ए-तक़लीद आयतुल्लाहिल उज़्मा सै० अली सीस्तानी ने मुसलमानों के दरमियान इत्तेहाद को मज़बूत बनाने पर ज़ोर दिया। रिपोर्ट के मुताबिक़ इराक़ की मजलिसे आला इस्लामी के रहनुमा सदरुद्दीन अल-क़पांची ने कहा कि आयतुल्लाह सीस्तानी ने नजफ़ अशरफ़ में अहलेसुन्नत की अहम शख़्सियतों से मुलाक़ात में तमाम मुसलमानों को पैकरे वाहिद क़रार दिया। इराक़ के बुज़ुर्ग मरजए तक़लीद ने इस मुलाक़ात में मुसलमानों को ऐसी तक़रीरों और बयानों से बचने की हिदायत की जिस से मुसलमानों की एकता कमज़ोर होती हो। आयतुल्लाह सीस्तानी ने कहा कि सिर्फ़ सहयूनी रियासत मुसलमानों के दरमियान इख़्तेलाफ़ से फ़ायदा उठाती है।

बहरैन में सितमरसीदा मुज़ाहेरीन ने

वज़ीरे आज़म के दफ़्तर का घेराव किया

बहरैन के दारुलहुकूमत मनामा में हज़ारों शिया मुज़ाहेरीन ने वज़ीरे आज़म के दफ़्तर का घेराव कर लिया है और इसके साथ ही मनामा का लू-लू स्क्वायर एक बार फ़िर मुज़ाहेरीन के नारों से गूँज उठा। मुज़ाहेरीन की सफ़ तीन किलोमीटर लम्बी है। बहरैनी मुज़ाहेरीन बादशाही निज़ाम को ख़त्म करने का मुतालबा कर रहे हैं। बहरैन में इस्लाहात के लिए इस तहरीक को एक माह हो रहा है और हुकूमत पर दबाव में इज़ाफ़ा होता चला जा रहा है। बहरैन अमरीकी बहरिया के पाँचवें फ़्लैट का मसकन है और यहाँ के शिया एक ज़माने से अपने साथ होने वाले तास्सुब और इम्तियाज़ी सुलूक पर नाराज़ रहे हैं और ये सूरते हाल अब एक तहरीक की शक्ल में इख़्तियार कर गई है। बहरैन में सलमान अल-ख़लीफ़ा और उनका ख़ानदान चालीस साल से हुकूमत में है और मुख़ालिफ़ पार्टी के शिया ग्रुपों का मुतालबा है कि मुल्क में आईनी बादशाहत क़ायम की जाए। इससे पहले सनीचर की रात को हज़ारों लोग मार्च करते हुए लू-लू स्क्वायर पर जमा हुए। उनमें बड़ी तादाद में औरतें और बच्चे भी शामिल थे। मुज़ाहिरीन हुकूमत के ख़ातमे का मुतालबा कर रहे थे। अरब दुनिया में अमरीका और इस्राईल नवाज़ अरब हुक्मरानों के ख़िलाफ़ अवामी इन्क़ेलाब की लहर जारी है। ट्युनिश के बाद मिस्र, उर्दुन, यमन, अल-जज़ाएर, बहरैन और सऊदी अरब में सख़्त मुज़ाहरे हुए हैं। सऊदी अरब ने मुज़ाहरों पर पाबन्दी लगा दी है जबकि दूसरे अरब मुल्कों में मुज़हरों का सिलसिला जारी है। सऊदी अरब, अरब ख़ित्ते में अमरीका का सबसे बड़ा हिमायती है जिसकी अमरीका के साथ तिजारत का इस्राईल को बड़ा फ़ायदा पहुँचता है। अमरीका सऊदी अरब के ज़रिए इलाक़ाई इंक़ेलाबों का ख़त्म करने की तलाश और कोशिश कर रहा है।

शाही या दहतशगर्दी

पिछले दिनों मिस्र के अवाम ने वहाँ के शाह के ज़ुल्म और सितम के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाई और मज़लूमों ने ये आवाज़ ''यक़ीं मोहकम अमल पैहम मुहब्बत फ़ातेहे आज़म'' के मिस्दाक़ बहुत साबित क़दमी से उठाई नतीजे में वहाँ नाम नेहाद अमरीका नवाज़ हाकिम हुसनी मुबारक को मिस्र छोड़कर भागना पड़ा और तहरीर स्क्वायर पर मिस्री अवाम ने आज़ादी का परचम बलन्द करके जश्न मनाया। कई टी०वी० चैनलों ने इस इंक़ेलाब को इंक़ेलाबे इस्लामी ईरान से तश्बीह दी। ख़ुद रहबरे इंकेलाब इस्लामी ईरान ने इस मिस्री इंक़ेलाब की तारीफ़ की और इसे अवामी इंक़ेलाब से ताबीर किया। मिस्र में शाही के ख़ातमे के बाद तो जैसे पूरी दुनियाए शहंशाहियत हिल गई और जहाँ-जहाँ शाही हुकूमत (अमरीका नवाज़ हुकूमत) थी वहाँ-वहाँ उसकी चूलें हिलती नज़र आने लगीं। एक ज़माने से लीबिया के शाह मुअम्मर अल-क़ज़ाफ़ी अमरीका नवाज़ी में इतना मस्त हो गए कि जब आँख खुली तो अपने ही लड़के को अमरीकी दहशतगर्दी का शिकार पाया। याद रहे कि क़ज़ाफ़ी ने लीबिया में न मालूम कितने निहत्तों और मज़लूमों के ख़ून को पानी के बराबर भी न समझा। और इसके बाद यमन और ट्यूनिश में भी शाही दम तोड़ रही है। मगर हैरत की बात ये है कि इन सभी मुल्कों में शाही इस्लामी चोले पहने हुए ज़ुल्म और सितम करती रही मगर सऊदी हुकूमत सब जानते हुए भी नज़रें हटाए रही। मज़लूम फ़िलिस्तीनियों की हिमायत के लिए इस्राईल व अमरीका के ज़ुल्म और ज़्यादती के ख़िलाफ़ उनके फ़तवों के कुँएं सूखे पड़े रहे मगर इधर शिया अकसरियती मुल्क बहरैन की अवाम ने अपने मुल्क में शाही के ख़िलाफ़ पुरअमन एहतेजाज शुरु किया और फ़ौरन आले सऊद ने अपने आक़ा अमरीका के हुक्म से बहरैनी मुज़ाहेरीन पर ज़ुल्म व तशद्दुद के लिए अपनी फ़ौज बहरैन में ठूँस दी फिर क्या था। बहरैनी शियों की मिसाल भी फ़िलिस्तीनियों की सी हो गई मगर हमें यक़ीन है कि बहरैन की राजधानी मनामा में बहरैनी अवाम का पुरअम्न एहतेजाज रंग लाएगा क्योंकि बहरैन का हक़ नामी इंक़ेलाब हक़ है भी, और तारीख़ गवाह है कि हमेशा जीत और कामरानी हक़ और हक़ परस्तों ही की हुई है।

सऊदी हुकूमत ने अपनी फ़ौजें बहरैन में दाख़िल करके मज़लूम और पुरअम्न मुज़ाहिरीन पर अत्याचार की हद तो उस वक़्त ख़त्म कर दी जब पुर अम्न मुज़ाहेरा करने वालों पर गोलीबारी की गई और अस्पतालों का भी मुहासरा कर लिया कि किसी ज़ख़्मी का मौक़े पर इलाज तक न होने पाए। जिसकी वजह से ज़ख़्मी बहरैनियों का इलाज वहाँ की मस्जिदों में हो रहा है।

बहरैनी, सऊदी, अमरीकी और शाही हुकूमतों की इन नाइंसाफ़ियों और बैनुलअक़वामी क़ानूनों की ख़िलाफ़ वर्ज़ियों के बावजूद बहरैन के अल-विफ़ाक़ सोसाइटी के रहनुमा शैख़ अली सलमान ने कहा है कि बहरैन में शिया उस वक़्त तक घरों को वापस नहीं लौटेंगे जब तक उनकी माँगें स्वीकार करके उन पर अमल न होगा।

ख़बरों के मुताबिक़ शैख़ अली सलमान ने ये बात एक ग़ैर मुल्की टी०वी० चैनल को इण्टरव्यु देते हुए कही। उन्होंने बताया कि बहैरैनी शिया अपने हुक़ूक़ और जमहूरियत की बहाली की कोशिश कर रहे हैं जिसे किसी भी मुल्क चाहे वह सऊदी अरब हो या अमरीका की फ़ौजें, कुचल नहीं सकतीं, ख़बरो के मुताबिक़ सऊदी फ़ौजें शिया रहनुमाओं के घरों को निशाना बना रही हैं। ज़ाहिर सी बात है कि सऊदी हुकूमत यानी अमरीकन भेड़िये, इंक़ेलाबे इस्लामी-ए-ईरान के बानी हज़रत इमाम ख़ुमैनी के जुराअतमंदाना किरदार से हमेशा डरे रहे हैं।